नई सेवा को दिया था, जब उन्हें 50 के दशक में फ़िल्मी लेखन से रेडियो में बतौर अधिकारी बुलाया गया था।

3 अक्तूबर 1957 को विविध भारती सेवा का श्रीगणेश बम्बई में हुआ। पंडित नरेंद्र शर्मा ने विविध भारती की शुरुआत करते हुए कविता पढ़ी थी, मानस भवन में आर्य जन जिसकी उतारे आरती, भगवान भारतवर्ष में गूँजे विविध भारती। विविध भारती पर बजा पहला गीत भी पंडित नरेंद्र शर्मा ने लिखा था और अनिल विश्वास ने इसे स्वरबद्ध किया था। इसके बोल थे नाच मयूरा नाच। इसे मशहूर गायक मन्ना डे ने स्वर दिया था। विविध भारती सेवा का स्टूडियो बंबई में बनाया गया। सामाजिक सरोकारों से जुड़ी विभिन्न विधाओं साहित्य, खेल, फिल्म या देश के अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़े ख्यातनाम हस्तियों की यात्राओं को विविध भारती ने स्थान देना प्रारंभ किया। जहाँ एक ओर मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, हरिवंशराय बच्चन जैसे ख्यातिप्राप्त साहित्यकारों की रिकॉर्डिंग की गयी वहीं नौशाद, ओपी नैयर, खय्याम, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, कल्याणजी आनंदजी जैसे सुप्रसिद्ध संगीतकारों को भी ससम्मान विविध भारती ने आमंत्रित किया। मजरूह सुल्तानपुरी, आनंद बख्शी, हसरत जयपुरी जैसे बड़े गीतकारों के साथ गुलजार, जावेद अख्तर और इरशाद को भी। नर्गिस, देवानंद, सुनील दत्त, राजकपूर, दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन और नूरजहाँ, मुबारक बेगम, लता मंगेश्कर, आशा भोंसले से लेकर कविता कृष्णमूर्ति, सुनिधि चौहान व श्रेया घोषाल को विविध भारती ने श्रोताओं तक बखूबी पहुँचाया है। एक पूरे इंद्रधनुषीय खजाने से विविध भारती समृद्ध रहा है।

जयमाला और हवामहल विविध भारती के शुरूआती कार्यक्रम रहे हैं। सुदूर सीमाओं पर तैनात हमारे जवानों के मनोरंजन के लिए पहले आज के जैसे अत्याधुनिक संसाधन नहीं थे। इसलिए विविध भारती ने सैनिकों के लिए जयमाला नाम से फिल्मी गीतों का एक विशेष कार्यक्रम शुरु किया। फौजी भाई आकाशवाणी को पत्र लिखकर अपनी फरमाइश भेजते थे और उनकी फरमाइश को पूरा करते हुए विविध भारती रोज़ शाम को सात बजे वही गीत बजाया करता था। 'जयमाला' 1962 में चीन युद्ध के बाद शुरू किया गया था। सिपाही, लांसनायक, हवलदार, सूबेदार

> "वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया के कुप्रभाव के चलते पूरी दुनिया एक अंतरराष्ट्रीय मंडी में तब्दील हो चुकी है। बाजारवाद का दबदबा है। हम पर भी बाजारवाद की ताकतों का प्रभाव पड़ा है। अब नजीर अकबरावादी की तरह यह कहने का हौसला कहाँ कि दुनिया में हूं, दुनिया का तलबगार नहीं हूं, बाजार से गुजरा हूं, खरीदार नहीं हूं।

फौजी भाइयों के ये सब पदनाम जयमाला में प्रायः सुनायी देते। सोमवार से शुक्रवार तक फौजी भाइयों की पसंद के फिल्मी गीतों के इस कार्यक्रम को शनिवार के दिन इसकी प्रस्तुति मशहूर फिल्मी हस्ती देते थे, रविवार को जयमाला का नाम जयमाला संदेश। जिसमें फौजी भाई अपने आत्मीय जनों को और फौजियों के आत्मीय जन देश की सेवा कर रहे इन फौजियों के नाम अपने संदेश विविध भारती के माध्यम से देने लगे। और इसने लगातार अपनी लोकप्रियता बढ़ाई। यहां यह रेखांकित कर देना ज़रूरी है कि विविध भारती पहला ऐसा रेडियो चैनल या मीडिया चैनल रहा जिसने खासतौर पर फौजियों के लिए कोई कार्यक्रम आरंभ किया।

विविध भारती पर जयमाला की पहली प्रस्तुति नरगिस ने की। इसके बाद इसमें आशा पारीख, माला सिन्हा, वहीदा रहमान, हेमा मालिनी के नाम जुड़े। कभी-कभी विशेष जयमाला नाम से इस कार्यक्रम के प्रसारण में लता मंगेशकर, अमिताभ बच्चन, देवानंद, धर्मेंद्र और शशि कपूर आदि कलाकार फौजी भाइयों के उत्साहवर्द्धन एवं प्रेरणा हेतु आमंत्रित किए गए। जयमाला से फौजियों का प्यार जगज़ाहिर रहा है। 1999 में जब हमारे पड़ोसी पाकिस्तान ने अघोषित युद्ध छेड़ दिया उस समय जयमाला हमारे जवानों के लिए एक ऐसा माध्यम सिद्ध हुआ जिसने उन्हें अपनी राजी-खुशी की खैर-खबर अपने परिजनों तक पहुँचाने में बड़ी मदद की। 'हैलो जयमाला' ही उनका टच स्क्रीन हुआ करता था जिससे वे अपनी भावनाएँ अपनों तक संप्रेषित कर सकते थे।

वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया के कुप्रभाव के चलते पूरी दुनिया एक अंतरराष्ट्रीय मंडी में तब्दील हो चुकी है। बाजारवाद का दबदबा है। हम पर भी बाजारवाद की ताकतों का प्रभाव पड़ा है। अब नजीर अकबरावादी की तरह यह कहने का हौसला कहाँ कि दुनिया में हूं, दुनिया का तलबगार नहीं हूं, बाजार से गुजरा हूं, खरीदार नहीं हूं। आपस में पिरोने के माध्यम के रूप में प्राणप्रतिष्ठित उदारवाद ने लालच गुस्से और नफरत को बढ़ावा दिया। असमानता के समानुपाती क्रम में विस्तारित नकारात्मकता ने जो तकनीकी कंगूरे गढ़े उनमें स्थानीयता नदारद है और ग्लोबल आर्किटेक्ट की बनावटी इत्र से सराबोर। बाजारू सूचनाजगत की लंगूरी ट्रोल फौज ने सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक